**ओ३म्**

**‘वेदों की कुछ प्रमुख विशेषतायें’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 महर्षि दयानन्द के आने से पूर्व लोग वेदों को प्रायः भूल ही गये थे। वेद संस्कृत भाषा में हैं और वेदों की भाषा लौकिक न होकर ईश्वरीय भाषा है जिसका अर्थ ज्ञान ऋषि प्रणीत व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य पद्धति द्वारा निरूक्त आदि व्याकरण के आर्ष ग्रन्थों की सहायता से होता है। वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थ व अभिप्राय सामान्य मनुष्य को ज्ञात नहीं होते। इसके लिए आर्ष व्याकरण के ज्ञान सहित व्यक्ति का सदाचारी, ब्रह्मचारी, योगी, शास्त्रों के प्रति सच्ची निष्ठा रखने वाला, वेदांग और उपांगों को जानने वाला आदि अनेक गुणों से युक्त होना आवश्यक है। यदि ऐसा जीवन व व्यक्तित्व न हो तो वेदों का यथार्थ तात्पर्य अध्येता को ज्ञात नहीं होता। इन कमियों के कारण अतीत में वेद भाष्यकार सायण व महीधर आदि वेदों के यथार्थ अर्थों को नहीं जान सके। उन्होंने लौकिक संस्कृत का सहारा लेकर अनेक मन्त्रों के अनुचित अर्थ कर दिये जिससे ईश्वरीय ज्ञान वेद प्रशंसा की वस्तु न बनकर उपहास की वस्तु बन गई। महर्षि दयानन्द जी वह ऋषि थे जो योगी थे, ईश्वर के साक्षात्कर्ता थे, ब्रह्मचारी, स्वस्थ शरीर, ईश्वर व वेद भक्त, ज्ञान विज्ञान सहित वेदों के अंग व उपांगों के भी जानकार थे। उनकी ऊहा पूर्व के विद्वानों की तुलना में विलक्षण एवं उच्च कोटि की थी। यही कारण था कि वह इन सभी सहायक गुणों व अपनी अद्भुद प्रतिभा के कारण वेदों के यथार्थ अर्थ जान सके। उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी कर विश्व की मानव जाति को वेद और वेदों के यथार्थ अर्थों से परिचित कराया। उनकी कृपा से आज सारा संसार वेदों को आदर की दृष्टि से देखता है। संयुक्त राष्ट संघ ने ऋग्वेद जिसमें अन्य तीन वेद भी समाहित प्रतीत होते हैं, उसे विश्व की धरोहर घोषित किया है।

वेदों की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि यह सर्व प्राचीन हैं। सृष्टि के आरम्भ से आज तक का कोई समय ऐसा नहीं रहा जब कि वेद मनुष्यों को उपलब्ध न रहे हों। योगी ऋषियों ने अपने तप व ईश्वर भक्ति से इस तथ्य का साक्षात्कार भी किया था वेद मनुष्यों द्वारा अनुसंधान किया हुआ ज्ञान नहीं है अपितु यह ईश्वर का निज ज्ञान है जो उसे सृष्टि के आरम्भ में अपने जीवन के निर्वाहार्थ अर्थात् कर्तव्य व अकर्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए दिया गया था। वेदों का अध्ययन करने पर यह तथ्य भी सामने आता है कि वेदों का अध्ययन कर लेने पर मनुष्य अपने जीवन में जिस विषय का चाहें अध्ययन कर उसमें उच्च स्थिति को प्राप्त हो सकता है। वेदों में सभी सत्य विद्याओं का ज्ञान है। वेदों में निहित विद्याओं को मूल को जानकर अपनी ऊहा से मनुष्य उसका विस्तार कर उसे आधुनिक स्तर व उससे भी आगे विकसित व उन्नत कर सकता है। मनुष्य को सृष्टि के आरम्भ में बोलने की भाषा भी वेदों से मिली थी। ऋषि वेदों के ज्ञान के अनुरूप परस्पर वेदों के शब्दों व व्याकरण से मिलती जुलती संस्कृत भाषा का प्रयोग करते थे। अपने सम्पर्क के सभी लोगों से भी वह इसी भाषा में बातें करते, उन्हें पढ़ाते व उनके कर्तव्यों का ज्ञान कराते थे। इससे सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों पर आधारित संस्कृत भाषा का प्रचलन हुआ था जो महाभारत और उसके बाद के अनेक वर्षों तक न केवल भारत अपितु विश्व के सभी देशों में चलता रहा। ऋषि दयानन्द भी अपने जीवन काल में उसी भाषा में व्यवहार करते थे। उन्होंने वेदों का जहां उसी संस्कृत भाषा में भाष्य किया वहीं उन्होंने वेदों के मन्त्रों के संस्कृत भाष्य का हिन्दी अनुवाद भी साथ साथ दिया है। अपने सभी ग्रन्थ भी देश की एकता व देशवासियों की सुविधा के लिए उन्होंने आर्यभाषा हिन्दी में रचे हैं। आज सभी भाषाओं का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने पाया है कि सभी भाषाओं में संस्कृत के अधिकांश शब्द कुछ विकारों के साथ पाये जाते हैं। यह वेद की सर्व प्राचीनता व विशिष्टता का ही प्रमाण है।

वेदों से हमें ईश्वर, जीवात्मा और सृष्टि के मूल कारण जड़ प्रकृति का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता हैं जो कि अन्य मनुष्यकृत साम्प्रदायिक वा धार्मिक मतों की पुस्तकों सहित उनके धर्म ग्रन्थों में प्राप्त नहीं होता। इससे सिद्ध होता है कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है व अन्य सभी मत व उनकी पुस्तकें अल्प ज्ञानी मनुष्यों की रचनायें हैं। सभी मतों की पुस्तकों की अनेक बातें तर्क व युक्ति के विरुद्ध तो हैं ही, उनमें कहानी व किस्से अधिक पाये जाते हैं। विज्ञान से उनका कोई लेना देना नहीं है। वेद मन्त्रों जैसी रचना व उत्कृष्टता उन साम्प्रदायिक ग्रन्थों व उनके विचारों में नहीं पायी जातीं।

वेद की एक विशेषता यह भी है कि वेद किसी एक मत का धर्म ग्रन्थ नहीं अपितु सर्व प्राचीन होने से यह सभी मतों का मत व धर्म का पुस्तक है। इसकी कोई भी शिक्षा किसी भी मनुष्य, जाति व मत के विरुद्ध नहीं है। सभी मत एक दूसरे को अच्छा बुरा कहते हैं। दूसरे मतों की पुस्तकों व मान्यताओं की आलोचना करते हैं परन्तु वेदों की आलोचना कोई नहीं करता। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि वेदों की सभी मान्यतायें सत्य है, अतः कोई इनकी आलोचना करें तो कैसे करे। यह सबकी मौन स्वीकृति प्रतीत होती है। जब वेदों की मान्यतायें सत्य है और कोई उनकी आलोचना नहीं करता तो सबका यह कर्तव्य बनता है कि वह वेदों का अध्ययन करें और अपने अपने मत की पुस्तक से उसकी तुलना कर श्रेष्ठ को स्वीकार और अश्रेष्ठ का त्याग करें। यही मनुष्यों का कर्तव्य हैं। यदि वह ऐसा नहीं करते तो अपनी ही हानि करते हैं।

वेदों की एक विशेषता यह है कि यह सार्वकालिक भी हैं। वेदों की सभी शिक्षायें सृष्टि के आदि काल में भी संसार के सभी मनुष्यों के लिए उपयोगी थी, आज भी हैं और भविष्य में भी रहेगी। वेदों के नियमों, सिद्धान्तों व शिक्षाओं का विज्ञान के नये नये सिद्धान्तों से भी खण्डन नहीं होता। इसका यह अर्थ है कि वेद और विज्ञान परस्पर पूरक व अन्योन्याश्रित हैं। आज का युग विज्ञान का युग है। आज का युग धर्म वही हो सकता है जो विज्ञान व ज्ञान के अनुकल अर्थात् बुद्धि व तर्क संगत हो। यदि ऐसा नहीं है तो वह धर्म नहीं हो सकता। दूसरी ओर यह बात भी सत्य है कि सभी मतों की पुस्तकों की मान्यतायें विज्ञान की पूरक व उसके अनुकूल नहीं है। अतः विज्ञान सम्मत वेद ही एकमात्र आज के भी यथार्थ धर्म ग्रन्थ हैं। हमें लगता है कि एक वह दिन अवश्य आयेगा जब यूरोप के सत्य प्रिय लोग वेदों का अध्ययन कर उसे अपनायेंगे और विश्व में उनका प्रचार होगा।

ईश्वर व आत्मा को जानने व आत्मा का ईश्वर को प्राप्त करने का सीधा, सरल व यथार्थ मार्ग केवल और केवल वेद में ही दिया गया है। ईश्वर के यथार्थ गुणों को जानकर अपनी आत्मा व जीवन को उसके अनुरूप व पूरक बनाकर ही हमारा यह जीवन सफल हो सकता है। हमें पाप व दुराचार आदि से मुक्त होना होगा। इसके मुक्त होने पर ही हम ईश्वर की उपासना में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। ईश्वर की उपासना में सफलता सत्याचार व सत्य के ग्रहण से ही प्राप्त होती है। वेद विरुद्ध व अधूरी उपासना पद्धतियों से मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार वा प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। इसके लिए हमें अपना जीवन स्वामी दयानन्द व प्राचीन ऋषियों के अनुरूप बनाना होगा। नहीं बनायेंगे तो हानि में रहेंगे और बना पाये तो फिर हमारी सांसारिक और पारलौकिक उन्नति निश्चय ही होगी।

वेदों के महत्व पर हमने कुछ पंक्तियां लिखी हैं। यह आपको समर्पित हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**